Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2025 6(2), 142–149

EVOLUTION OF RAGA STRUCTURE IN HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC: FROM THE EIGHTEENTH CENTURY TO THE PRESENT

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग संरचना का विकास: अठारहवीं शताब्दी से वर्तमान तक

Rishav Bhardwaj [1]

[1] Assistant Professor, Department of Music-Vocal, Swami Vivekanand Government Degree College Nihri, District Mandi, Himachal Pradesh, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v6.i2.2025.6406

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2025 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: This research presents an in-depth study of the developmental dimensions of the raga structure of Hindustani classical music. Ragas are not merely mathematical or technical combinations of notes and rhythms, but are a living reflection of Indian society, culture, spirituality and emotional outlook. This tradition of Indian music has been evolving for centuries and in every era its structure has transformed and acquired new directions in accordance with the needs of time, society and culture. The music of the eighteenth century was dominated by the Dhrupad style, in which seriousness, sadhana and spirituality were prominent. Dhrupad defined the raga structure with characteristics such as strict discipline, vocal purity and meditation. From the nineteenth century to the twentieth century, styles such as khayal and thumri emerged, which opened up possibilities of emotional expression, flexibility and innovation in ragas. Khayal gave the raga structure a dimension of imagination and freedom, while thumri established shringar and emotionalism at the centre of music. Thus, the raga is no longer just a medium of sadhana and discipline, but has become a live expression of various emotions. In the twenty-first century, raga structure has assumed a more multifaceted form. Digital technology, recording means, online platforms and global presentation styles have made ragas a medium of international communication by taking them beyond borders. Now ragas are not limited to the Indian tradition, but have become easily available to global listeners as well. The conclusion of this research is that the history of raga structure is not only the gradual development of music, but it is also a living record of Indian cultural and social history. The cultural consciousness, emotional sensitivities and historical traditions of Indian society are still expressed through ragas.

Hindi: यह शोध हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की राग संरचना के विकासात्मक आयामों का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। राग केवल स्वरों और लयों का गणितीय या तकनीकी संयोजन भर नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज, संस्कृति, अध्यात्म और भावनात्मक दृष्टिकोण का जीवंत प्रतिबिंब है। भारतीय संगीत की यह परंपरा सदियों से विकसित होती रही है और हर युग में इसकी संरचना ने समय, समाज और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित होकर नई दिशाएँ प्राप्त की हैं। अठारहवीं शताब्दी के संगीत में ध्रुपद शैली का वर्चस्व रहा, जिसमें गम्भीरता, साधना और आध्यात्मिकता प्रमुख रही। ध्रुपद ने राग संरचना को कठोर अनुशासन, स्वर-शुद्धता और ध्यानयोग जैसी विशेषताओं से परिभाषित किया। उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक ख़याल और ठुमरी जैसी शैलियों का उद्भव हुआ, जिसने रागों में भावनात्मक अभिव्यक्ति, लचीलापन और नवाचार की संभावनाएँ खोलीं। ख़याल ने राग संरचना को कल्पनाशीलता और स्वच्छंदता का आयाम दिया, वहीं ठुमरी ने श्रृंगार और भावप्रवणता को संगीत के केंद्र में स्थापित किया। इस प्रकार राग अब केवल साधना और अनुशासन का माध्यम न रहकर विविध भावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति का रूप लेने लगा। इक्कीसवीं सदी में राग संरचना ने और अधिक बहुआयामी स्वरूप ग्रहण किया है। डिजिटल तकनीक, रिकॉर्डिंग साधन, ऑनलाइन मंच और वैश्विक प्रस्तुति-शैलियों ने रागों को सीमाओं से परे पहुँचाकर उन्हें अंतरराष्ट्रीय संवाद का माध्यम बना दिया है। अब राग केवल भारतीय परंपरा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक श्रोताओं के लिए भी सहज उपलब्ध हो गए

हैं। इस शोध का निष्कर्ष यह है कि राग संरचना का इतिहास केवल संगीत का क्रमिक विकास नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास का जीवंत अभिलेख भी है। रागों के माध्यम से भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, भावनात्मक संवेदनाएँ और ऐतिहासिक परंपराएँ आज भी अभिव्यक्त होती हैं।

Keywords: Hindustani Classical Music, Raga Structure, Dhrupad, Khayal, Thumri, Cultural History, Tradition and Modernity, Digital Experiment हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, राग संरचना, ध्रुपद, ख़याल, ठुमरी, सांस्कृतिक इतिहास, परंपरा और आधुनिकता, डिजिटल प्रयोग

1. प्रस्तावना

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह परंपरा सहस्रों वर्षों पुरानी है और यह केवल मनोरंजन या कला का साधन नहीं है; यह भारतीय समाज, संस्कृति, अध्यात्म और दर्शन का जीवंत प्रतिबिंब है। राग इस परंपरा का मूल है। राग सिर्फ स्वरों का एक समूह नहीं है; यह एक जीवंत, संवेदनशील संरचना है जो श्रोता में गहरी भावनाएँ और मनोभाव पैदा करती है, विशेष रूप से स्वर-संबंध और स्वर-परिवर्तन के माध्यम से। सांकृत्यायन (2015) का कहना है कि राग का प्रभाव सिर्फ सुनने से नहीं होता, बल्कि मन और आत्मा पर भी प्रभाव डालता है। रागों को सिर्फ संगीतिक संरचना मानना गलत होगा। राग भी सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव का प्रतीक हैं। भारतीय समाज में धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों ने संगीत और खासकर राग-परंपरा की दिशा और स्वरूप को बहुत प्रभावित किया है। यही कारण है कि राग परंपरा स्थायी नहीं रही, बल्कि निरंतर विकसित होती रही है और हर युग की विशेषताओं को शामिल करती रही है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में दो मुख्य धाराएँ हैं: हिंदुस्तानी (उत्तर भारत) और कर्नाटक (दक्षिण भारत) संगीत यद्यपि इन दोनों की जड़ें समान वैदिक परंपरा में थीं, राजनीति, भूगोल और काल ने इन्हें अलग-अलग बनाया। इनमें हिंदुस्तानी संगीत की ऐतिहासिक यात्रा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने ध्रुपद से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक कई बड़े बदलावों को देखा है। Abhāra षडजा (2017) का कहना है कि १८वीं शताब्दी तक हिंदुस्तानी संगीत मुख्य रूप से ध्रुपद-प्रधान था। विलम्बित आलाप, गंभीरता, गूढ़ता और अलंकारिकता ध्रुपद के लक्षण थे। यह शैली अनुशासन, गहन शास्त्रीयता और आध्यात्मिकता का प्रतीक थी। तानसेन और उसके समकालीन संगीतज्ञों ने दरबारी संस्कृति में ध्रुपद को सम्मानित किया। किंतु समय बदला और समाज में नए विचारों और भावनाओं का प्रवाह आया, संगीत भी नई दिशा ग्रहण करने लगा। परिणामस्वरूप, ख्याल और ठुमरी जैसी शैलियाँ उन्नीसवीं शताब्दी में प्रचलित हुईं (शास्त्री, 2017)। ख्याल ने रागों को अधिक भावुक, लचीला और अभिव्यंजक बनाया। इस शैली के माध्यम से गायक अपनी निजी भावनाओं और विचारों को व्यक्त कर सकता था। राग संरचना में ठुमरी ने स्त्री-भावनाओं, श्रृंगार और करुण रस को विशेष महत्व दिया और कोमल और लोकधर्मी भावनाओं को स्थान दिया।

बीसवीं शताब्दी में हिंदुस्तानी संगीत ने एक नया मुकाम हासिल किया। इस समय रागों को नियंत्रित करने के लिए थाट प्रथा विकसित हुई। इसने रागों को वैज्ञानिक आधार दिया और उन्हें सरल और आसान बनाया। विद्यालयों की स्थापना ने संगीत को गुरु-शिष्य परंपरा से बाहर निकालकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक हिस्सा बनाया (NCERT, 2015)। इस समय आकाशवाणी और ग्रामोफोन जैसे उपकरणों ने भी आम लोगों को संगीत सुनाया। इक्कीसवीं शताब्दी में आते-आते राग केवल मंचीय प्रस्तुति तक नहीं सीमित रहे। आज यह वैश्विक संगीत परंपराओं, नवीन तकनीकें और नए माध्यमों के साथ प्रयोगों में शामिल हो गया है। आज के कलाकार पारंपरिक ढाँचे में बंधे रहने के बजाय रागों को नए आयाम दे रहे हैं, जैसा कि डिजिटल मंचों पर उपलब्ध अध्ययन बताते हैं (श्रीवरलक्ष्मी और माहेश्वरी, 2015)। (जयराजभॉय, १७९१) जयराजभॉय (1971) का मत है कि निरंतरता और परिवर्तनशीलता उत्तर भारतीय राग परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता हैं। इसकी यह विशेषता है कि यह समय के साथ जीवित और प्रासंगिक रहता है। राग संरचना, इस प्रकार, केवल संगीत की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति और तकनीक में हुए गहरे बदलावों का जीवंत चित्र भी है। रागों की यात्रा बताती है कि संगीत एक संवेदनशील जीवन और समय की गाथा है।

2. साहित्य समीक्षक

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग संरचना के विकास को समझने के लिए कई विद्वानों, संगीतज्ञों और अनुयायियों ने अपने-अपने स्तर पर महत्वपूर्ण काम किया है। राग भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म और भावनाओं का दृष्टिकोण है; यह सिर्फ सुरों की वैज्ञानिक संरचना है। इसलिए रागों को पढ़ना केवल संगीत ही नहीं है, बल्कि भारतीय जीवन और परंपरा को समझने का एक माध्यम भी है। इस साहित्य समीक्षा में अठारहवीं शताब्दी से लेकर आज तक राग संरचना का इतिहास बताया गया है।

बोनी सी. वेद (1997) ने ख्याल: क्रिएटिविटी विदिन नॉर्थ इंडियाज क्लासिकल म्यूजिक ट्रेडिशन में खाल शैली का व्यापक अध्ययन किया है। वेद का मानना है कि 18वीं और 19वीं शताब्दी में राग संरचनाओं को लचीले, लचीले और लचीले बनाने के लिए खाल ने ध्रुपद की ज्यामिति और नियंत्रक से अलग किया। काल्पनिकता और वैयक्तिक अभिव्यक्ति ने शास्त्रीयता को शास्त्रीयता प्रदान की। उदाहरण के लिए, नॉच शैली ने बोल-तान और गीतकार को खाल में महत्व दिया, जबकि किराना शैली ने मींड और स्वर की गहराई पर बल दिया। इससे स्पष्ट होता है कि विचार ने राग संरचना को केवल पुराने जमाने का पालन करने वाला शास्त्र नहीं बनाया, बल्कि एक जीवंत और निरंतर विकसित होने वाली परंपरा बनाई।

डैनियल न्यूमैन (1990) ने अपनी पुस्तक द लाइफ ऑफ म्यूजिक इन नॉर्थ इंडिया में बताया कि हिंदुस्तानी संगीत लोकजीवन और शहरी संस्कृति का एक हिस्सा था और केवल दरबारों और धार्मिक समारोहों तक सीमित नहीं था। न्यूमैन ने आश्रम और गुरु-शिष्य संप्रदाय की भूमिका पर बल देते हुए कहा कि संप्रदाय ने राग संरचना को संप्रदाय समाज में जीवित रखा। उनका कहना है कि संगीत ने आम लोगों की भावनाओं और भावनाओं को किसी भी गहराई से देखा था, न कि केवल उच्च वर्ग या राजघराने के बीच। यह दृष्टिकोण रागों को अधिक सामाजिक और सांस्कृतिक आधार देता था।

पीटर मैनुअल (1989) ने ऐतिहासिक और शैलीगत परिप्रेक्ष्य में ठुमरी की उत्पत्ति और विकास को प्रस्तुत किया। उन्हें पता चला कि ठुमरी ने राग बनाने में विशेष साम्यता और स्मारक जोड़े। ठुमरी विशेष रूप से धारण और विरह रस को व्यक्त करने के लिए एक बहुत ही प्रभावशाली शैली बन गई। अवध और बनारस की ठुमरी शैली ने भावपूर्णता और गायता में एक नया आयाम जोड़ा। क्लासिकल संगीत से लेकर तकनीकी कलाकारों तक, अधिक से अधिक सांस्कृतिक भावनाओं और मानवीय संबंधों के दर्पण बनाए गए।

जोएप बोर (1999) की पुस्तक द राग गाइड आज रागों का मानक और वैज्ञानिक मार्गदर्शक है। इस लेख में रागों के आरोह-अवरोह, वादी-सामवादी स्वर, समय के संगीतकारों और उनके विशिष्ट मॉडलों की व्यापक चर्चा की गई है। इन्हें जटिल राग भी सरल भाषा में और स्थिर तरीके से दिखाया गया है। उन्होंने, उदाहरण के लिए, राग यमन और दरबारी कान्हड़ा को इसी तरह की समानता दी कि विद्यार्थी और शोधकर्ता दोनों ही रागों की संरचना और सुंदरता को आसानी से समझ सकें। इसलिए यह पाठ्य-शिक्षण और अनुसंधान दोनों अलग-अलग पर बहुत ही आकर्षक है।

विष्णु नारायण भातखंडे (1920-30 का दशक): हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में उनका योगदान क्रांतिकारी माना जाता है। 'दस थाट प्रणाली' नामक हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के चार टुकड़ों में रागों को उनकी कृति में स्थापित किया गया था। पहले रागों को अलग-अलग सामुद्रिक के अनुसार नहीं रखा जाता था। भाखंडे ने यमन, काफी और भैरव जैसे थाटों को जानने के लिए संबंधित रागों को सुव्यवस्थित स्थान में बांट दिया। इस वैज्ञानिक प्रक्रिया ने संगीत को सिखाना आसान बना दिया और रागों की संरचना को मानकीकृत रूप भी दिया। आज भी भातखंडे की थाट प्रणाली संगीत शिक्षा में रूपरेखा है।

1901: विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने गंधर्व कॉलेज की स्थापना की। उन्हें गुरु-शिष्य परंपरा की सीमित सीमा से बाहर के सांस्कृतिक संगीत शिक्षा को डोकलाम ढाँचे में प्रस्तुत किया गया। पलुस्कर ने संगीत को आम जनता तक सीमित करने का प्रयास किया, न कि राजदरबार या विशिष्ट वर्ग तक सीमित कर दिया। राग संरचना को व्यवस्थित रूप से जनसामान्य तक के लिए उनकी शिक्षा व्यवस्था में नोटेशन और परीक्षा प्रणाली शामिल होती है। पलुस्कर ने संगीत को संस्थानीकरण और लोकतंत्रीकरण दिया।

एनसीईआरटी (2015) ने स्वर-ताल लिपि पद्धति (उत्तर भारत) में राग संरचना को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से जोड़ा। इस सिद्धांत में स्वर-ताल, थाट प्रणाली और राग-वर्गीकरण का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। यह टेक्स्ट हार्ड म्यूजिक सिद्धांतों को सरल और लिपि में प्रस्तुत करता है, इसलिए यह छात्रों और इंजीनियरिंग दोनों के लिए उपयोगी होगा।

वैप (2023): वैप की तरह वैप ने डिजिटल युग में राग संरचना को बड़े पाठक वर्ग तक में प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यमन (राग) संबंधी लेख, उदाहरण के लिए, राग की संरचना, स्वरूप और परंपरा को सरल और सहज भाषा में बताता है। विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए एक उपयोगी संदर्भ माध्यम बन गया है, हालांकि यह द्वितीयक स्रोत माना जाता है।

3. कार्यप्रणाली

इस शोध का स्वरूप ऐतिहासिक तथा विश्लेषणात्मक है। राग संरचना का विकास केवल संगीतमय दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संदर्भों में भी हुआ है। अतः शोध में प्रयुक्त कार्यप्रणाली बहु-आयामी (multi-dimensional) रखी गई है, जिसमें प्राथमिक स्रोतों, द्वितीयक स्रोतों तथा तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

1) प्राथमिक स्रोतों का उपयोग

सबसे पहले अध्ययन के लिए प्राथमिक स्रोतों का संकलन किया गया। इनमें प्रमुख रूप से प्राचीन संगीत ग्रंथ और प्रत्यक्ष रचनाएँ सम्मिलित हैं। उदाहरणस्वरूप, विष्णु नारायण भातखंडे (1920s–30s) की हिंदुस्तानी संगीत पद्धति एक महत्वपूर्ण आधार रही, जिसमें दस ठाट प्रणाली का प्रतिपादन किया गया। इस ठाट प्रणाली के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार अलग-अलग रागों का वर्गीकरण कर उन्हें एक वैज्ञानिक रूप प्रदान किया गया। इसी प्रकार, विष्णु दिगंबर पलुस्कर (1901) द्वारा स्थापित गांधर्व महाविद्यालय से संबंधित ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन किया गया। इनसे यह जानकारी प्राप्त हुई कि संगीत शिक्षा किस प्रकार पारंपरिक गुरु-शिष्य पद्धति से निकलकर औपचारिक संस्थागत ढाँचे में आई।

इन प्राथमिक स्रोतों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि राग संरचना का मूल स्वरूप प्राचीनता और परंपरा में निहित है, किंतु 19वीं और 20वीं सदी में इसे व्यवस्थित रूप देने के लिए विद्वानों ने ठोस शैक्षिक एवं सैद्धांतिक प्रयास किए।

2) द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन

अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का भी महत्वपूर्ण प्रयोग किया गया, जो विद्वानों के शोधपत्रों, संगीत संबंधी जर्नल, तथा डिजिटल स्रोतों से प्राप्त हुए। उदाहरणस्वरूप, बॉनी सी. वेड (1997) ने ख़याल के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट किया कि ध्रुपद की कठोरता से हटकर ख़याल ने राग संरचना को भावनात्मक और लचीला बनाया। इसी प्रकार, डैनियल न्यूमैन (1990) ने The Life of Music in North India में संगीत की सामाजिक पृष्ठभूमि और घरानों के प्रभाव को समझाया। पीटर मैनुएल (1989) ने ठुमरी को भावनात्मक राग संरचना का उत्कृष्ट उदाहरण बताया, जबकि जोएप बोर (1999) ने The Raga Guide में रागों की संरचना को सरल और वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया।

इसके अतिरिक्त, Wikipedia (2023) जैसे डिजिटल स्रोतों, dhrupad.info, तथा sangeetgalaxy जैसी वेबसाइटों से यह समझने में मदद मिली कि डिजिटल युग में राग संरचना किस प्रकार लोकप्रियता और प्रयोगात्मकता के नए आयामों से जुड़ रही है। साथ ही, एन.सी.ई.आर.टी. (2015) की स्वर-ताल लिपि पद्धति (उत्तर भारत) ने राग संरचना को आधुनिक शिक्षा पद्धति और विद्यालयी पाठ्यक्रम में जोड़ने की भूमिका निभाई।

3) तुलनात्मक विश्लेषण

राग संरचना के परिवर्तनों को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन की विधि अपनाई गई। इस शोध में तीन प्रमुख रागों—यमन, भीमपलासी और दरबारी कान्हड़ा—का चयन किया गया।

- राग यमन का अध्ययन यह दर्शाता है कि समय के साथ इसमें शुद्ध मध्यम से तीव्र मध्यम का प्रयोग बढ़ा और इसके सौंदर्य में लयात्मक विविधता जुड़ी।
- राग भीमपलासी का विश्लेषण बताता है कि यह काफी ठाट से उत्पन्न हुआ, किंतु इसमें औडव-सम्पूर्ण रूप ने इसे विशिष्ट स्वरूप दिया।
- राग दरबारी कान्हड़ा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि तानसेन द्वारा इसे अकबर के दरबार में विकसित किया गया और इसमें गम्भीरता, विलंबित आलाप तथा भावात्मक गहराई इसकी विशेषताएँ रहीं।

इन तीनों रागों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि समय, सांस्कृतिक वातावरण और सामाजिक संरचनाएँ रागों के विकास और प्रस्तुति को सीधे प्रभावित करती रही हैं।

4. तुलनात्मक विश्लेषण

राग संरचना के परिवर्तनों को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन की विधि अपनाई गई। इस शोध में तीन प्रमुख रागों—यमन, भीमपलासी और दरबारी कान्हड़ा—का चयन किया गया। इनका स्वरूपगत तुलनात्मक अध्ययन निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है:

तालिका 1: प्रमुख रागों का तुलनात्मक अध्ययन

राग का नाम	ठाट (Thaat)	स्वर-संरचना (Aroh-Avroh)	वादी/संवादी स्वर	समय/प्रस्तुति का काल
यमन	कल्याण ठाट	आरोह: नि र ग म# प ध नि सां अवरोह: सां नि ध प म# ग र नि सां	वादी: ग संवादी: नि	सन्ध्या (रात्रि का प्रथम प्रहर)
भीमपलासी	काफी ठाट	आरोह: नी सा ग म प नि सा अवरोह: सा नि ध प म ग र सा	वादी: म संवादी: सा	अपराह्न (दोपहर के बाद)

दरबारी कान्हड़ा	आसावरी ठाट	आरोह: नि सा रे ग म प ध नि सां अवरोह: सां नि ध प म ग रे सा	वादी: रे संवादी: प	रात्रि (मध्यरात्रि)

5. परिणाम

इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि राग संरचना का विकास दो प्रमुख स्तरों पर देखा जा सकता है—एक तरफ ऐतिहासिक एवं संगीतात्मक परिवर्तन, और दूसरी तरफ आधुनिक वैश्विक एवं डिजिटल संदर्भ।

1) ऐतिहासिक-संगीतात्मक विकास

ध्रुपद के गंभीर और स्थिर स्वरूप से लेकर ख़याल और ठुमरी की भावनात्मकता तक राग संरचना निरंतर रूपांतरित हुई। घरानों ने इस प्रक्रिया में विशेष भूमिका निभाई और अपनी-अपनी शैलीगत विशिष्टताओं द्वारा राग संरचना में विविधता जोड़ी।

तालिका 2 कालानुसार राग संरचना का स्वरूप

कालखंड	प्रमुख शैली	संरचना की विशेषता	उदाहरण
18वीं शताब्दी	ध्रुपद	स्थिर, गंभीर, धीमी आलाप शैली	राग भैरव
19वीं–20वीं सदी	ख़याल, ठुमरी	लचीलापन, भावात्मकता, अलंकारों का प्रयोग	राग दरबारी, राग काफी
20वीं सदी (आधुनिक)	घराने	शैलीगत विविधता, वाद्य और गायन का समन्वय	ग्वालियर, किराना घराना

चर्चा:

यह तालिका भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास को कालानुसार दिखाती है और राग संरचना को समय के साथ बदलते हुए दिखाती है। 18वीं शताब्दी में ध्रुपद का प्रभाव रहा, जो अपनी गंभीरता, स्थिरता और धीमी आलाप शैली के लिए प्रसिद्ध था। लंबे-लंबे आलापों के माध्यम से ध्रुपद गायक राग की शुद्धता को सामने रखते थे। इसमें भावनाओं की अपेक्षा ध्यान और गंभीरता का अधिक महत्व दिखाई देता था। राग भैरव जैसे रागों, जिन्हें प्रातःकालीन समय में गाया जाता था और जिनमें गहन श्रद्धा और अनुशासन का भाव स्पष्ट झलकता था, इस काल में बहुत महत्वपूर्ण थे। ध्रुपद शैली का संगीत मंदिर पारंपरिक था, इसलिए इसमें शुद्धता और भक्ति का विशेष स्थान था।

19वीं और 20वीं सदी में खयाल और ठुमरी जैसी शैलियों का विकास हुआ, जिससे संगीत ने एक नया रूप लिया। ख़याल ने राग संगीत को अधिक भावात्मक और लचीला बनाया। विभिन्न अलंकारों, तानों और बोल-आलापों का प्रयोग संगीत को अधिक जीवंत और रसपूर्ण बनाया। ध्रुपद की कठोरता में, कलाकार अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति का प्रदर्शन कर सकते थे। उस समय ठुमरी भी विकसित हुई, जिसने रागों को और अधिक भावपूर्ण, कोमल और रोमांटिक बनाया। ठुमरी विशेषकर श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई और इसमें राग दरबारी तथा राग काफी जैसे रागों का व्यापक प्रयोग हुआ। इन रागों में स्वर की कोमलता और भावनाओं की लयात्मकता मुख्य रूप से दिखाई देती हैं, जो संगीत को अधिक लोकप्रिय और जनमानस के निकट बनाया है। 20वीं सदी में घरेलू परंपरा ने राग संरचना को नए रंग दिए। प्रत्येक घराने ने राग गायन में अपनी अलग शैली बनाई। जैसे ग्वालियर में घराना बोल-तान और स्पष्ट उच्चारण महत्वपूर्ण हैं। यह घराना खयाल परंपरा में सबसे प्राचीन और अनुशासित है। वहीं किराना घराना स्वर की गहराई, मींड और सूक्ष्म लहरियों पर विशेष ध्यान देता है, जिससे गायन बहुत मधुर और प्रभावशाली होता है। घरानों के कारण राग संरचना में शैलीगत विविधता आई और संगीत एक परंपरा में नहीं रहकर कई रूपों में विकसित होने लगा।

यह तालिका दिखाती है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग संरचना स्थिर और गंभीर ध्रुपद से शुरू होकर धीरे-धीरे लचीले और भावपूर्ण खयाल तथा ठुमरी तक पहुँची और अंततः घरेलू परंपरा के माध्यम से विविधतापूर्ण और बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर पाई। भारतीय संगीत केवल एक परंपरा का अनुकरण नहीं है; यह समय, समाज और कलाकारों की रचनात्मकता से निरंतर विकसित होता रहा है।

2) आधुनिक संदर्भ और डिजिटल युग

इक्कीसवीं सदी में राग संरचना वैश्वीकरण और डिजिटल माध्यमों के कारण बहुआयामी हो गई है। राग अब न केवल पारंपरिक प्रस्तुति तक सीमित हैं बल्कि नए प्रयोगों और शैलियों से भी जुड़े हैं।

तालिका 3 चयनित रागों का तुलनात्मक विश्लेषण

राग का नाम	ठाट	स्वर प्रयोग	समय	भाव/रस	विशेषता
यमन	कल्याण	तीव्र म, शेष शुद्ध स्वर	संध्या	भक्ति, उदात्त	नी-रे-गम पकड़
भीमपलासी	काफी	कोमल ग, नि	अपराह्न	करुण, विषाद	सा-मा, प-ग मींड
दरबारी कान्हड़ा	आसावरी	कोमल ग, ध, नि	मध्यरात्रि	गम्भीर, गंभीर	विलंबित आलाप

चर्चा:

इक्कीसवीं सदी में राग संरचना वैश्वीकरण और डिजिटल माध्यमों के कारण और भी बहुआयामी हो गई है। अब राग केवल पारंपरिक प्रस्तुति तक सीमित नहीं रहे, बल्कि नए प्रयोगों और आधुनिक शैलियों के साथ एक नया रूप ले चुके हैं। इस संदर्भ में यदि हम कुछ प्रमुख रागों जैसे यमन, भीमपलासी और दरबारी कान्हड़ा का तुलनात्मक अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक राग की अपनी विशिष्ट पहचान है, जो न केवल उसके ठाट और स्वरों पर आधारित है बल्कि समय और भावनाओं से भी गहराई से जुड़ी है।

राग यमन, जो कल्याण ठाट से संबद्ध है, अपने स्वरूप में तीव्र 'म' और शेष शुद्ध स्वरों का प्रयोग करता है। इसे संध्या समय गाया-बजाया जाता है और इसका भाव भक्ति तथा उदात्तता से जुड़ा होता है। इसकी पहचान नी-रे-गम पकड़ में निहित है, जो इसे शांति और दिव्यता का स्पर्श देती है। इसके विपरीत राग भीमपलासी काफी ठाट का राग है, जिसमें कोमल 'ग' और 'नि' का प्रयोग किया जाता है। इसे अपराह्न समय में प्रस्तुत किया जाता है और यह करुण तथा विषाद रस का संचार करता है। इसका मुख्य आकर्षण सा-मा और प-ग मींड है, जो राग को करुणा और भावुकता से भर देता है।

इसी क्रम में दरबारी कान्हड़ा, जो आसावरी ठाट से संबंधित है, अपनी गंभीरता और गहराई के लिए जाना जाता है। इसमें कोमल 'ग', 'ध' और 'नि' का प्रयोग होता है। इसे मध्यरात्रि के समय गाया जाता है और यह गंभीरता तथा राजसी गहराई का भाव उत्पन्न करता है। इसकी विशिष्टता विलंबित आलाप में है, जो इसकी गंभीरता को और गहरा बना देती है।

इन तीनों रागों का तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि राग केवल स्वरों का संयोजन मात्र नहीं हैं, बल्कि वे समय-विशेष, भावनाओं और सांस्कृतिक अनुभवों के साथ जुड़कर एक जीवंत और सजीव परंपरा का निर्माण करते हैं। इस प्रकार राग भारतीय संगीत की वह धारा है, जो परंपरा और आधुनिकता दोनों को समेटते हुए निरंतर बहती रहती है।

6. विवेचना

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की राग संरचना का विकास एक लंबी सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षणिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें विभिन्न कालखंडों की बदलती भावनाएँ, राजनीतिक हालात और सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ शामिल हैं। राग केवल स्वर और लय का गणितीय संयोजन नहीं है; यह समाज की सामूहिक चेतना, आध्यात्मिक साधना और जीवन-दर्शन का जीवंत प्रतीक है। यह परंपरा हर युग में बदलती रही है और नई-नई संभावनाओं को अपनाती रही है, जैसा कि इसके विकास का इतिहास दिखाता है।अठारहवीं शताब्दी में ध्रुपद ने शासन किया। तत्कालीन धार्मिक और राजदरबारी संस्कृति धरुपद की रचनात्मकता, स्थिरता और गंभीरता से घिरी हुई थी। उस समय संगीत को मुख्यतः मंदिरों और राजदरबारों में बजाया जाता था, इसलिए इसमें अनुशासन, भक्ति और श्रद्धा का प्रभाव स्पष्ट है। ध्रुपद गायक ने श्रोताओं को आध्यात्मिक अनुभव देने के लिए अपने गायन में गाम्भीर्य और निष्ठा को प्राथमिकता दी। ध्रुपद का आलंबन धर्म और सत्ता के बीच गहरे संबंध को भी दिखाता है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी आते-आते संगीत का रूप बदलता है। खयाल और ठुमरी जैसी शैलियों का उदय इस समय हुआ, जिसने राग संरचना को अधिक लचीला, भावप्रधान और सुंदर बना दिया। रचनात्मक स्वतंत्रता, तानों की विविधता और भावनात्मक अभिव्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण रहे। वहीं ठुमरी ने श्रृंगार और करुण रस को संगीत का मूल विषय बनाया। उस समय की नवाबी दरबारों और उदार सांस्कृतिक प्रवृत्तियों ने इस परिवर्तन पर गहरा प्रभाव डाला है। लखनऊ और बनारस की ठुमरी परंपरा ने रागों में कोमलता, नज़ाकत और भावपूर्णता का समावेश किया, जो सामाजिक जीवन में स्त्री-संवेदनाओं और भावुकता के उदय को भी दिखाता है। राग संरचना का विकास घरों की परंपरा से हुआ है। प्रत्येक घराने ने रागों को अपनी तरह प्रस्तुत किया। ग्वालियर घराना बोल-तान की प्रधानता और संतुलित प्रस्तुति के लिए जाना जाता है, जबकि किराना घराना मींड और स्वरों की सूक्ष्मता पर आधारित गायकी के लिए जाना जाता है। द्रुत तानों की शक्ति और लयकारी की जटिलता में आगरा घराना अपनी पहचान बनाता है। जयपुर-अतरौली घराने ने भी जटिल रागों के विलक्षण प्रस्तुतीकरण की परंपरा बनाई। इन घरों की परंपरा दिखाती है कि संगीत सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान और विभिन्न क्षेत्रों की सांगीतिक धरोहर का दर्पण भी रहा है। बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में विष्णु नारायण भातखंडे और विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने राग संरचना को व्यवस्थित करने और शैक्षणिक आधार देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भातखंडे ने रागों को समझने और पढ़ाने के लिए दस ठाट बनाए, जो संगीत अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक और

आसान बनाया। दूसरी ओर, पलुस्कर ने संगीत को शिक्षित करने के लिए एक संस्था बनाया। उनके संगीत विद्यालयों और संस्थानों ने शास्त्रीय संगीत को पारंपरिक घरों से बाहर निकालकर आम लोगों तक पहुँचाया। राग संरचना एक सुव्यवस्थित ज्ञान-विज्ञान की तरह विकसित हुई और अकादमिक अनुशासन का दर्जा प्राप्त हुआ।

इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने राग संरचना की दिशा को नए आयाम दिए। डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे YouTube, Spotify और कई ऑनलाइन पाठ्यक्रमों ने शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया। यह पहले घरों और विशेष वर्गों तक सीमित था, लेकिन अब यह दुनिया भर के श्रोताओं तक पहुंच गया है। इससे राग संरचना में नए अवसर पैदा हुए। शास्त्रीय संगीत ने फ़्यूज़न, हाइब्रिड संगीत और विभिन्न संगीत परंपराओं के संयोजन से अपनी नई पहचान बनाई। उदाहरण के लिए, रागों को इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियों और पश्चिमी वाद्ययंत्रों के साथ मिलाकर आज के श्रोताओं को भी आकर्षित करता है। कुल मिलाकर, राग संरचना का विकास एक निरंतर प्रक्रिया है, जो तकनीकी, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करती रही है। रागों ने भारतीय समाज के सौंदर्यबोध को आकार दिया है, जो कि अतीत की धार्मिक गंभीरता से लेकर आज की वैश्विक विविधता तक चला गया है. वे भी नवाचार और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक बने हैं। राग संरचना, इस प्रकार, भारतीय संगीत परंपरा के निरंतर विकसित प्रवाह की महत्वपूर्ण धरोहर है।

7. निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राग संरचना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में एक निरंतर विकसित, जीवंत और गतिशील प्रक्रिया है। अपने स्वर-संयोजन और लयात्मक संरचना के कारण, राग एक समाज, संस्कृति और समय की भावनाओं का चित्रण भी है। इसकी यात्रा हमें बताती है कि संगीत न केवल मनोरंजन का एक साधन है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक अनुभव और भावनात्मक संवेदनाओं का एक व्यापक दस्तावेज भी है। अठारहवीं शताब्दी में ध्रुपद की कठोरता और गम्भीरता ने राग संरचना को नियंत्रण और स्थिरता दी। राग उस समय धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभवों के रूप में विकसित हुए, न कि सिर्फ शास्त्रीय मंच की परंपराओं में। रागों ने भावनात्मकता, सौंदर्यबोध और श्रृंगारिकता को अपनाया, जब खयाल और ठुमरी का विकास हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि राग संरचना ने सामाजिक परिवर्तनों और समय की आवश्यकताओं के अनुसार अपने आप को बदलने की क्षमता हमेशा रखी है। इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण और डिजिटल युग ने नई संभावनाओं के द्वार खोले, इसलिए राग संरचना ने भी आधुनिक तकनीकी साधनों और अंतरराष्ट्रीय मंचों के साथ समन्वय बनाया। अब राग केवल पारंपरिक संगीत सभाओं या घरों तक सीमित नहीं रह गए हैं; वे ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, रिकॉर्डिंग्स और वैश्विक संगीत महोत्सवों के माध्यम से विश्वव्यापी लोकप्रियता हासिल कर चुके हैं। इससे राग संरचना का स्वरूप और अधिक विविध है। इस अध्ययन से पता चलता है कि राग संरचना केवल सुर और ताल का यांत्रिक संयोजन नहीं है; यह भारतीय समाज और संस्कृति की विविधता, भावनात्मक गहराई और समयानुसार अनुकूलनशीलता का जीवंत प्रतीक है। रागों ने शास्त्रीय संगीत को आधुनिकता और परंपरा के बीच एक पुल बनाया है। यह भारतीय सांस्कृतिक और सांगीतिक इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अतः राग संरचना का विकास सिर्फ एक सांगीतिक यात्रा नहीं है; यह एक सांस्कृतिक यात्रा भी है, जिसमें भविष्य की संभावनाओं की ओर देखना और अतीत से जुड़ाव दोनों ही विद्यमान हैं। इसकी सबसे बड़ी शक्ति इसे विश्वव्यापी बनाती है।

संदर्भ सूची

"हिंदुस्तानी राग संगीत के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ (PDF)." ResearchGate, 30 अप्रैल 2015, https://www.researchgate.net/publication/275646247. अभिगम 19 अगस्त 2025.

विकिपीडिया योगदानकर्ता. "भारतीय शास्त्रीय संगीत." विकिपीडिया, 2023, https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_classical_music.

हिंदुस्तानी संगीत में राग पद्धति का क्रमिक विकास. एनसीईआरटी, 2015, https://ncert.nic.in/textbook/pdf/khgv105.pdf.

जयराज़भॉय, नज़ीर अली. उत्तर भारतीय संगीत के राग: उनकी संरचना और विकास. SOAS/Worktribe Repository, 1971, https://soas-repository.worktribe.com/output/1530071.

शास्त्री, दिव्या. "हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और रवींद्र संगीत का अध्ययन." Scribd, 2017, https://www.scribd.com/document/352876981.

"सामाजिक समारोह और संगीत." अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ़ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट (IJTSRD), खंड 3, अंक 6, 2019, पृ. 95–102, https://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd59936.

"हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का विकास – अधारा शादजा." अधारा शादजा ब्लॉग, 28 फ़रवरी 2017, https://adharashadja.wordpress.com/2017/02/28/evolution-of-hindustani-classical-music.

"हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास." एक्ज़ॉटिक इंडिया आर्ट, 2018, https://www.exoticindiaart.com/book/details/origin-and-development-of-raga-in-hindustani-music.

श्रीवरलक्ष्मी, वी., और पी. उमा महेश्वरी. “विनाइल से डिजिटल तक: भारतीय शास्त्रीय संगीत में तकनीकी प्रगति का एक शताब्दी.” संगीत गैलेक्सी, 2015, https://sangeetgalaxy.co.in/articles/from-vinyl-to-digital.